بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد


# Office of The Sadr Majlis Ansarullah Bharat

## دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com


सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक20.10.2017 मस्जिद बैतुल फ़तूह,मॉर्डन लंदन

**मेरे लिए इस वरदान का पाना असम्भव न था यदि मैं अपने सय्यद व मौला फ़ख़्रुल अम्बिया और ख़ैरुल वरा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग का अनुसरण न करता।**

**हमें अन्य लोगों को कहने से पहले आत्म निरीक्षण करने की आवश्यकता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर हमने किस हद तक क़ुर्आन-ए-करीम को अपना कार्यकारक संविधान बनाया है, यह बैअत का अंश भी है, सच्चाई को हमने किस हद तक स्थापित किया है, न्याय को हम किस हद तक स्थापित करने वाले हैं, लोगों के हक़ देने में हम किस हद तक प्रयास करने वाले हैं।**

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात् हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले जुम्अः के ख़ुत्बः में मैंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का एक हवाला पढ़ा था जिसमें आपने मुसलमाने की साधारण स्थिति के विषय में फ़रमाया था कि यदि उनकी यह स्थिति न हो गई होती और वे इस्लाम की वास्तविकता से पूर्णतः दूर न जा पड़े होते तो फिर मेरे आने की क्या आवश्यकता थी। इन लोगों की ईमानी हालतें बड़ी दुर्बल हो गई हैं और वे इस्लाम के अभिप्रायः और उद्देश्य से अपरिचित हैं। ये लोग समझते हैं कि हममें कौनसी बात इस्लाम के विरुद्ध है। हम **ला इलाहा इल्लल्लाह** कहते हैं, नमाज़ें भी पढ़ते हैं तथा रोज़े भी रखते हैं और ज़कात भी देते हैं। किन्तु मैं कहता हूँ कि इनके समस्त कर्म, सद्कर्मों के रंग में नहीं हैं अन्यथा यदि ये शुभ कर्म हैं तो फिर इनके पवित्र परिणाम क्यूँ उत्पन्न नहीं होते। शुभ कर्म तो तब हो सकते हैं कि वे हर प्रकार के फ़साद और मिलावट से पाक हों परन्तु इनमें ये बातें कहाँ हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- आज सबसे अधिक फ़साद की हालत मुस्लिम देशों में है। एक दूसरे की गर्दनें काटने के लिए अग्रसर हैं। प्रत्येक **ला इलाहा इल्लल्लाह** पढ़ता तो है परन्तु दूसरे **ला इलाहा इल्लल्लाह** पढ़ने वाले का ख़ून करता है, उसके अधिकारों का हनन करता है, उसको हानि पहुंचाने का प्रयास करता है। क्या यही क़ुर्आन की शिक्षा है जिसपर ये लोग अमल कर रहे हैं। क्या यही आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नमूना है जिसका ये लोग अनुसरण कर रहे हैं? आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सुन्दर आचरण के विषय में तो हज़रत आयशा रज़ीयल्लाहु अन्हा का यह स्वर्ण शब्दों में लिखा जाने वाला बयान है कि كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْاٰنُ अर्थात- आपके पवित्र जीवन और आपकी शैली का पता करना है तो क़ुर्आन-ए-करीम आपके जीवन का चित्रण है, उसे पढ़ो तथा ये नमूने आपने इस लिए क़ायम फ़रमाए हैं कि आपको मानने वाले इनका अनुसरण करें, केवल नारे लगाने के लिए नहीं। अल्लाह तआला ने भी यही फ़रमाया है कि मेरे संग वास्तविक सम्बंध केवल **ला इलाहा इल्लल्लाह** कहने से स्थापित नहीं होगा बल्कि मेरे स्नेह को प्राप्त करना है तो फिर मेरे प्यारे रसूल का अनुसरण करो, उसके सुन्दर आचरण को अपनाओ तो मेरे प्यारे बन जाओगे। तुम्हें वह स्थान प्राप्त हो जाएगा जो अल्लाह तआला की निकटता का स्थान है अन्यथा तुम्हारे नारे खोखले हैं। अतः अल्लाह तआला फ़रमाता है कि قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ अर्थात- तू कह दे कि यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और अल्लाह बड़ा क्षमाशील तथा बार बार दया करने वाला है। क्या अल्लाह तआला जिससे मुहब्बत करे उसका यही हाल होता है जो आजकल के मुसलमानों का है। उलमा जिनको सामान्य मुसलमान अल्लाह तआला का प्यारा समझते हैं, उसके निकट समझते हैं, वे सबसे अधिक दुनिया में फ़साद पैदा कर रहे हैं। इस प्रकार इस समय मुस्लिम आलिमों की सामान्य स्थिति इस बात को चाहती है कि कोई क़ुर्आन व सुन्नत का यथार्थ बताने वाला हो और वह अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार भेज

दिया है। किन्तु उलमा न स्वयं इस बात को सुनना चाहते हैं, न जनता को सुनने देते हैं बल्कि अल्लाह तआला की ओर आने वाले के विरुद्ध फ़तवे देकर एक प्रकार के भय तथा फ़साद व उपद्रव की स्थित पैदा कर दी है। यह आरोप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम पर प्रतिदिन लगता है कि आपने नऊज़ु बिल्लाह, सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने तथा अपनी बड़ाई के लिए जमाअत की स्थापना की। अतः हम जानते हैं कि आप आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे आशिक़ थे तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शरीअत की स्थाना के लिए ही अल्लाह तआला ने आपको भेजा था। क़ुर्आन-ए-करीम के ज्ञान तथा विद्वता का आभास आपके द्वारा ही हमें प्राप्त हुआ। आपने हर अवसर पर क़ुर्आन-ए-करीम की शिक्षा के प्रकाश में हमारा मार्ग दर्शन किया। अतः इस अयत قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ को विभिन्न अवसरों पर भिन्न भिन्न दृष्टि कोणों तथा भावार्थ के साथ आपने पेश फ़रमाया और यह वे बातें हैं जो अल्लाह तआला की निकटता दिलाकर, उसका प्यारा बनाकर, फ़ितना व फ़साद से निकालने वाली बन सकती हैं। मुसलमानो के लिए इसके अतिरिक्त अन्य कोई रास्ता नहीं अपनी दशा को सुधारने के लिए, अपने देशों में शांति स्थापना के लिए, इस्लाम की शान और महानता को दुनिया पर प्रकट करने के लिए। नेक परिणाम उस समय क़ायम होंगे जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का वास्तविक अनुसरण होगा अन्यथा ला इलाहा इल्लल्लाह का नारा भी खोखला है तथा मुहम्मद रसूलुल्लाह का नारा भी खोखला है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इस समय मैं इस आयत की व्यख्या में कुछ उद्धरण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पेश करुंगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मुसलमानों में भीतरी कलह का कारण भी यही दुनिया से प्रेम है क्यूँकि यदि केवल अल्लाह तआला की प्रसन्नता सामने होती तो सरलता पूर्वक समझ में आ सकता था कि अमुक सम्प्रदाय के नियम अधिक शुद्ध हैं तथा वे उन्हें स्वीकार करके एक हो जाते। अब जबकि संसार से प्रेम के कारण यह ख़राबी उत्पन्न हो रही है तो ऐसे लोगो को कब मुसलमान कहा जा सकता है जबकि उनका मार्ग आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पदचिन्हों पर नहीं। अल्लाह तआला तो फ़रमाता है कि قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ अर्थात- कहो कि यदि तुम अल्लाह तआला से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तआला तुमको दोस्त रखेगा। आप अलै. फ़रमाते हैं कि अब इस अल्लाह की मुहब्बत के बजाए तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण के बजाए, संसार के प्रेम को प्रमुख रखा हुआ है। क्या यही आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण है, क्या आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनियादार थे, क्यो वे नऊज़ु बिल्लाह ब्याज लिया करते थे अथवा अल्लाह के अधिकारों एवं कर्त्तव्यों की पूर्ति में आलस किया करते थे, क्या आप में, अल्लाह की पनाह, चापलूसी थी, द्विमुखी थे, दुनिया को दीन पर प्रमुखता देते थे, विचार करो। अनुसरण तो यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पद चिन्हों पर चलो और फिर देखो कि ख़ुदा तआला कैसे कैसे फ़ज़्ल करता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- परन्तु आजकल व्यवहारिक रूप से मुसलमानों की जो हालत है, और फिर अल्लाह तआला की ओर से जो जवाब इस व्यवहार के विरुद्ध है वह इस बात पर साक्षी है कि इनका बुरा हाल हो रहा है, देश से देश लड़ रहे हैं। अन्य लोगों के पास जाकर मुस्लिम देश, दूसरे मुस्लिम देशों के विरुद्ध लड़ने की भीख मांगते हैं। इसी का नक़शा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने खींचा है कि तुम लोग तो फटे हुए हो, अल्लाह तआला की कृपा को किस प्रकार ग्रहण कर सकते हो।

इस बात को बयान फ़रमाते हुए कि वास्तविक नेकी इंसान किस प्रकार प्राप्त कर सकता है, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं सच सच कहता हूँ तथा अपने अनुभव से कहता हूँ कि कोई व्यक्ति वास्तविक नेकी करने वाला तथा ख़ुदा तआला की प्रसन्नता को प्राप्त करने वाला नहीं हो सकता तथा इन पुरस्कारों एवं बरकतों, ज्ञान तथा कश्फ़ों से लाभान्वित नहीं हो सकता जो उच्च श्रेणी की पवित्र आत्मा को मिलते हैं जब तक कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण में लीन न हो जाए तथा इसका प्रमाण ख़ुदा तआला के कलाम से मिलता है कि قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ और ख़ुदा तआला के इस दावे का जीवित प्रमाण, आप अलै. फ़रमाते हैं कि मैं हूँ। इस

ज़माने में ख़ुदा तआला मुझसे कलाम करता है इस लिए आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्तित्व में लीन हो गया, आपका अनुसरण किया और अल्लाह तआला ने फिर मुहब्बत का व्यवहार किया। अतः आप पर आरोप लगाने वालों के इलज़ाम कि आपने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्तर को गिराया है, फ़रमा रहे हैं कि जो स्तर मुझे मिला वह आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ और मुहब्बत तथा आपके सम्पूर्ण अनुसरण के कारण मिला और फिर अल्लाह तआला ने भी ऐसा वरदान दिया कि अपने प्यारे से मुहब्बत करने के कारण अपना भी प्यारा बना लिया। इस सम्पूर्ण अनुसरण के परिणाम स्वरूप अल्लाह तआला ने आपको, जो आपके हवाले काम फ़रमाया, उसके बारे में फ़रमाते हैं कि मुझे भेजा गया है ताकि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खोई हुई महानता का फिर से स्थापित करूँ और क़ुरआन शरीफ़ की सच्चाईयों को दुनिया को दिखाऊँ और यह सब काम हो रहा है परन्तु जिनकी आँखों पर पट्टी है वे इसको नहीं देख सकते।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि महान भाग्य की प्राप्ति के लिए अल्लाह तआला ने एक ही मार्ग रखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनुसरण किया जावे जैसा कि इस आयत में स्पष्ट रूप से फ़रमा दिया قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللهُ अर्थात- आओ मेरा अनुसरण करो ताकि अल्लाह भी तुमको दोस्त रखे। इसका यह अर्थ नहीं है प्रथा के रूप में इबादत करो। यदि धर्म की वास्तविकता यही है तो फिर नमाज़ क्या चीज़ है और रोज़ा क्या चीज़ है, स्वयं ही एक बात से रुके और स्वयं ही कर ले। प्रथा वाली नमाज़ें नहीं हैं, नमाज़ें इस प्रकार अदा करो जो उनका हक़ है जो उनके समय हैं उनकी पाबन्दी करनी अनिवार्य है तथा फिर इस प्रकार इबादत करो कि अल्लाह तआला के सामने खड़े हो अन्यथा ये सारी इबादतों की प्रथाएँ हैं। फ़रमाया कि इस्लाम केवल इस बात का नाम नहीं है, इस्लाम तो यह है कि बकरे की भांति सिर रख दे जैसा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरा मरना मेरा जीना मेरी नमाज़ मेरी क़ुर्बानियाँ, अल्लाह ही के लिए हैं तथा सबसे पहले मैं अपनी गर्दन रखता हूँ। इस प्रकार वास्तविक अनुसरण करने वाले अपनी इबादतों के भी स्तर बुलन्द करते हैं। अतः हममें से प्रत्येक को आत्म निरीक्षण करना चाहिए कि इस दृष्टि से भी हमारी आवश्यकता है अन्यथा हमारा अनुसरण का दावा भी खोखला दावा है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- एक तो इबादत के रंग हैं दूसरे सुन्दर आचरण के रंग हैं और सच्चे अनुसरण का अर्थ यही है कि जो उच्च स्तरीय शिष्टाचार हैं जिनका क़ुर्आन-ए-करीम में वर्णन है, वे पैदा किए जाएँ। हज़रत आयशा रज़ीअल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया कि كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْاٰنُ कि आपके सुन्दर आचरण यदि देखने हैं तो क़ुर्आन-ए-करीम पढ़ लो, वही इसकी व्याख्या है। अतः इस दृष्टि से भी हमें क़ुर्आन-ए-करीम को पढ़ने की आवश्यकता है। हमें औरों को कहने से पहले अपना निरीक्षण करने की आवश्यकता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को मानकर हमने किस हद तक क़ुर्आन-ए-करीम को अपना संविधान बनाया है यह बैअत का भी अंश है, सत्य को हमने किस हद तक क़ायम किया है, न्याय को किस हद तक क़ायम करने वाले हैं, लोगों के अधिकारों की रक्षा में हम किस हद तक प्रयास करने वाले हैं।

प्रत्येक व्यक्ति में स्वयं ही ख़ुदा से मुलाक़ात करने की क्षमता नहीं है, इसके लिए माध्यम आवश्यक है तथा वह माध्यम क़ुर्आन शरीफ़ तथा आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। इस लिए जो आपको छोड़ता है वह कभी सफल नहीं होगा। इंसान तो वास्तव में बन्दा अर्थात सेवक है और सेवक का काम यह होता है कि स्वामी जो आदेश दे उसका पालन करे। इसी प्रकार यदि तुम चाहते हो कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़ैज़ प्राप्त करो तो अवश्य ही उनके सेवक बन जाओ। क़ुर्आन-ए-करीम में ख़ुदा तआला फ़रमाता है قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰى اَنْفُسِهِمْ अर्थात- कह दे, ऐ मेरे बन्दो, जिन्होंने अपनी आत्मा पर अत्याचार किया, फ़रमाया कि इस स्थान पर बन्दो से अभिप्रायः सेवक हैं न कि सृष्टि। रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बन्दा होने के लिए यह आवश्यक है कि आप पर दरूद पढ़ो तथा आपके किसी आदेश की अवज्ञा न करो तथा सारे आदेशों का पालन करो जैसा कि निर्देश है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला को प्रसन्न करने का एक यही तरीक़ा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सच्चा अनुसरण किया जावे। देखा जाता है कि लोग भांत भांत की प्रथाओं में लिप्त हैं। कोई मर जाता है तो भिन्न भिन्न प्रकार की प्रथाएँ की जाती हैं जबकि चाहिए कि निधन व्यक्ति के बारे में दुआ

करें। प्रथाओं के पालन में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का केवल विरोध ही नहीं बल्कि आपका अपमान भी किया जाता है। मानो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पर्याप्त नहीं समझा जाता और यदि काफ़ी समझते तो अपनी ओर से प्रथाएँ घड़ने की क्या आवश्यकता पड़ती।

फिर एक स्थान पर आप अलै. फ़रमाते हैं कि जो व्यक्ति यह कहता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण के बिना मुक्ति मिल सकती है, वह झूठा है। ख़ुदा तआला ने जो बात हमको समझाई है वह पूर्णतः इसके विपरित है। ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ तू कह दे कि यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण के बिना कोई व्यक्ति मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता। जो लोग आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ द्वेष रखते हैं उनकी कभी ख़ैर नहीं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- **कुल इन कुन्तुम**..... से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु का भी सुन्दर प्रमाण हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने पेश फ़रमाया। अरबों में तो विशेष रूप से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आसमान पर अब भी जीवित समझा जाता है तथा बड़ा प्रभावी दृष्टि कोण है उनका। अतः इसका रद्द करते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मेरी दृष्टि से मोमिन वही होता है जो आपका अनुसरण करता है तथा वही किसी स्तर तक पहुंचता है जैसा कि स्वयं अल्लाह तआला ने फ़रमा दिया है कि قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ तू कह दे कि यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा। आप फ़रमाते हैं कि मुहब्बत की आवश्यकता तो यह है कि प्रिय के कर्मों के साथ एक विशेष सम्बंध हो तथा मरना आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है अर्थात आपका निधन हुआ। आपने मर कर दिखा दिया फिर कौन है जो जीवित रहे अथवा जीवित रहने की अभिलाषा करे अथवा किसी अन्य के लिए समझे कि वह जीवित रहे। आप फ़रमाते हैं कि मुहब्बत की आवश्यकता यह है कि आपके अनुसरण में ऐसा लीन हो कि अपनी भावनाओं को नियन्त्रित करे तथा यह सोच ले कि मैं किसकी उम्मत हूँ। ऐसी अवस्था में जो व्यक्ति हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के विषय में यह आस्था रखता है कि वे अब तक जीवित हैं वह कैसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत और अनुसरण का दावा कर सकता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- मैंने केवल ख़ुदा के फ़ज़्ल से, न कि अपने किसी हुनर से इस वरदान में सम्पूर्ण अंश प्राप्त किया है जो मुझसे पहले नबियों और रसूलों और ख़ुदा के नेक बन्दों को दिया गया था तथा मेरे लिए इस वरदान की प्राप्ति असम्भव न थी यदि मैं अपने सय्यद व मौला फ़ख़्रुल अम्बिया और ख़ैरुल वरा हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मार्ग का अनुसरण न करता। इस प्रकार मैंने जो कुछ पाया इस अनुसरण के कारण पाया तथा मैं अपने सच्चे और सम्पूर्ण ज्ञान के कारण जानता हूँ कि कोई इंसान उस नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अनुसरण के बिना ख़ुदा तक नहीं पहुंच सकता तथा न ही सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः आप आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सम्पूर्ण आशिक़ तथा आपका अनुसरण करने वाले थे जिसके कारण ख़ुदा तआला ने आप से मुहब्बत की तथा मसीह मौऊद तथा मेहदी मअहूद तथा आधीन नबी होने का वरदान प्रदान किया।

ख़ुत्बः के अन्त में हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अल्लाह तआला हमें आपको मानने के बाद इसके महत्त्व का भी सामर्थ्य प्रदान करे तथा हमें भी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सम्पूर्ण अनुसरण करने वाला बनाए। हममें से प्रत्येक को अपनी अपनी क्षमताओं के अनुसार तथा सामर्थ्यों के अनुसार आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नमूने पर चलने तथा आपके अनुसरण की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और मुसलमानों को भी तौफ़ीक़ दे कि वे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस सच्चे आशिक़ को पहचानने वाले और मानने वाले बनें।



**TOLL FREE NO: 180030102131**